एम.एच.डी.

एम. ए. हिंदी कार्यक्रम

द्वितीय वर्ष के सत्रीय कार्य
(जुलाई 2016 और जनवरी 2017 सत्रों के लिए)

अनिवार्य पाठ्यक्रम

एम.एच़.डी.–1 : हिंदी काव्य –1
एम.एच.डी– 5 : साहित्य सिद्धांत और समालोचना
एम.एच.डी–7 : हिंदी भाषा और भाषाविज्ञान

वैकल्पिक पाठ्यक्रम

मॉड्यूल '1' – उपन्यास : विशेष अध्ययन

एम.एच.डी-13 : उपन्यास : स्वरूप और विकास
एम.एच.डी–14 : हिंदी उपन्यास–1 (प्रेमचंद का विशेष अध्ययन)
एम.एच.डी– 15 : हिंदी उपन्यास –2
एम.एच.डी– 16 : भारतीय उपन्यास

अथवा

मॉड्यूल '2' – दलित साहित्यः विशेष अध्ययन

एम.एच.डी–17 : भारत की चिंतन परंपराएँ और दलित साहित्य
एम.एच.डी–18 : दलित साहित्य की अवधारणा और स्वरूप
एम.एच.डी–19 : हिंदी दलित साहित्य का विकास
एम.एच.डी–20 : भारतीय भाषाओं में दलित साहित्य

इग्नू
जन-जन का विश्वविद्यालय

मानविकी विद्यापीठ
इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय
मैदानगढ़ी, नई दिल्ली–110 068

सत्रीय कार्य 2016-17

पाठ्यक्रम कोड : एम.एच.डी.

प्रिय छात्र/छात्राओ,

यह एम.ए. हिंदी द्वितीय वर्ष के सत्रीय कार्यों की पुस्तिका है। इसमें निम्नलिखित पाठ्यक्रमों के सत्रीय कार्य हैं :

अनिवार्य पाठ्यक्रम

एम.एच़.डी.–1 : हिंदी काव्य –1
एम.एच.डी–5 : साहित्य सिद्धांत और समालोचना
एम.एच.डी–7 : हिंदी भाषा और भाषाविज्ञान

वैकल्पिक पाठ्यक्रम

मॉड्यूल '1' – उपन्यास : विशेष अध्ययन

एम.ए.डी-13 : उपन्यास : स्वरूप और विकास
एम.एच.डी–14 : हिंदी उपन्यास–1 (प्रेमचंद का विशेष अध्ययन)
एम.एच.डी– 15 : हिंदी उपन्यास –2
एम.एच.डी– 16 : भारतीय उपन्यास

अथवा

मॉड्यूल '2' – दलित साहित्य : विशेष अध्ययन

एम.एच.डी–17 : भारत की चिंतन परंपराएँ और दलित साहित्य
एम.एच.डी–18 : दलित साहित्य की अवधारणा और स्वरूप
एम.एच.डी–19 : हिंदी दलित साहित्य का विकास
एम.एच.डी–20 : भारतीय भाषाओं में दलित साहित्य

एम.एच.डी.-5 पाठ्यक्रम 8 क्रेडिट का है। शेष सभी पाठ्यक्रम 4–4 क्रेडिट के हैं। प्रत्येक पाठ्यक्रम के लिए आपको एक-एक सत्रीय कार्य करना होगा। प्रत्येक सत्रीय कार्य के लिए 100 अंक निर्धारित किए गए है। प्रत्येक सत्रीय कार्य में पूरे पाठ्यक्रम से प्रश्न पूछे जाएंगे। विद्यार्थियों को सभी अनिवार्य पाठ्यक्रम के सत्रीय कार्य करने होंगे। लेकिन वैकल्पिक पाठ्यक्रमों के मॉड्यूल 'क' अथवा मॉड्यूल 'ख' में से किसी एक मॉड्यूल के सभी पाठ्यक्रमों के सत्रीय कार्य करने होंगे। आप उसी मॉड्यूल के पाठ्यक्रमों के सत्रीय कार्य करें जिस मॉड्यूल का आपने चयन किया है और जिसकी पाठ्य सामग्री आपको प्राप्त हुई है।

एम.ए. कार्यक्रम में अध्ययन के लिए आपको कई खंडों में पाठ्य सामग्री भेजी गई है। साथ ही पाठ्यक्रमों में अतिरिक्त अध्ययन के लिए 'विवेचना' नाम से आलोचनात्मक आलेखों के संग्रह भेजे गए हैं। एम.एच.डी.–1 में 'विविधा' नाम पुस्तक भी भेजी गई है। साथ ही एम.एच.डी.–17 से 20 तक चार 'विविधा' और एक 'विवेचना' नामक पुस्तक भी भेजी गई है।

एम.ए. स्तर पर परीक्षा के सवाल केवल पाठ्य पुस्तकों तक सीमित नहीं होते। अतः छात्रों से यह भी अपेक्षा की जाती है कि वे उपलब्ध कराई गई सामग्री के अतिरिक्त पुस्तकालयों से अन्य पुस्तकों और पत्रिकाओं का भी अध्ययन करें, जिससे ज्ञान में वृद्धि हो।

उद्देश्य : सत्रीय कार्य का उद्देश्य यह जाँचना है कि आपने पाठ्यक्रम से संबंधित सामग्री को कितना पढ़ा-समझा है और उसका विवेचन-विश्लेषण और मूल्यांकन करने की क्षमता कितनी अर्जित की है। सत्रीय कार्यों का उद्देश्य यह भी है कि पाठ्य सामग्री के अध्ययन के पश्चात् आप उसके संबंध में स्वयं अपना दृष्टिकोण विकसित कर सकें और उन्हें अपने शब्दों में लिख सकें। इसका तात्पर्य यह है कि विश्वविद्यालय द्वारा उपलब्ध कराई गई सामग्री को आप पुनर्प्रस्तुत न करें। बल्कि पूछे गए प्रश्नों का

उत्तर सोच-विचारकर अपने शब्दों में लिखें। आपके उत्तर में आपका अध्ययन, आलोचनात्मक दृष्टि रचनाओं के बारे में आपकी अपनी समझ और भाषा पर आपका अधिकार व्यक्त होना चाहिए। सत्रीय कार्य का मूल्यांकन करते हुए परीक्षक इन सभी बातों को ध्यान में रखेंगे।

निर्देश : सत्रीय कार्य आरंभ करने से पूर्व निम्नलिखित बातों को ध्यान से पढ़िए :

1. एम.ए. हिंदी के पाठ्यक्रमों के लिए कार्यक्रम दर्शिका में दिए हुए निर्देशों का सावधानीपूर्वक अध्ययन कीजिए।
2. अपनी उत्तर-पुस्तिका के पहले पृष्ठ के दाएँ सिरे पर अपना अनुक्रमांक, नाम, पूरा पता और दिनांक लिखिए।
3. अपनी उत्तर-पुस्तिकाओं की बाईं ओर पाठ्यक्रम का शीर्षक, सत्रीय कार्य कोड और उस अध्ययन केंद्र का नाम/कोड लिखिए, जिससे आप संबद्ध हैं।

उत्तर पुस्तिका का प्रथम पृष्ठ निम्न प्रकार से शुरू होगा :

	अनुक्रमांक :..
	नाम : ....
	पता : ....
पाठ्यक्रम शीर्षक :..	....
सत्रीय कार्य कोड :	....
अध्ययन केंद्र का नाम/कोड :	दिनांकः ....

4. उत्तर के लिए केवल फुलस्केप के आकार के कागज का इस्तेमाल करें और उन कागजों को अच्छी तरह से बाँध लें।
5. प्रत्येक उत्तर से पहले प्रश्न संख्या अवश्य लिखें।
6. अपनी लिखावट में उत्तर दें।
7. सत्रीय कार्य की उत्तर-पुस्तिका जाँच के लिए अपने अध्ययन केंद्र के समन्वयक (coordinator) के पास **जुलाई, 2016 सत्र** में प्रवेश लेने वाले विद्यार्थी अपना सत्रीय कार्य **31 मार्च 2017** और **जनवरी, 2017 सत्र** में प्रवेश लेने वाले विद्यार्थी अपना सत्रीय कार्य **30 सितम्बर, 2017** तक अवश्य जमा करा दें।

प्रश्नों के उत्तर देने से पूर्व निम्नलिखित निर्देशों का सावधानीपूर्वक अध्ययन करें:

1. आपकी सत्रांत परीक्षा तीन घंटे की होगी और प्रत्येक सत्रीय कार्य भी तीन घंटे में किए जा सकने की दृष्टि से तैयार किए गए हैं। इसलिए सत्रीय कार्य में दिए गए प्रश्नों का उत्तर लिखते हुए इस बात का ध्यान रखें कि सभी प्रश्नों के उत्तर तीन घंटे में लिखे जा सकें।
2. प्रश्नों में जो पूछा गया है, उसको अच्छी तरह समझ कर उत्तर लिखें। जो नहीं पूछा गया है, उसे न लिखें। जितना पूछा गया है, उतना ही लिखें।
3. व्याख्या से संबंधित अंशों में, संदर्भ, प्रसंग, व्याख्या और भाषा–शैली या अन्य किसी विशेष बात का उल्लेख करें। इन सभी पहलुओं के लिए अंक निर्धारित होते हैं।
4. अपने पास सत्रीय कार्य के उत्तर की प्रति अवश्य रखें।

शुभकामनाओं सहित!

नोटः याद रखें कि परीक्षा में बैठने से पूर्व सत्रीय कार्य जमा कराना अनिवार्य है। अन्यथा आपको परीक्षा में बैठने की अनुमति नहीं दी जाएगी।

एम.एच.डी–1
हिंदी काव्य–1 (आदि काव्य, भक्ति काव्य एवं रीति काव्य)
सत्रीय कार्य

पाठ्यक्रम कोड : एम.एच.डी.
सत्रीय कार्य कोड : एम.एच.डी–1/टी.एम.ए/2016–17
कुल अंक : 100

1. **निम्नलिखित प्रत्येक काव्यांश की लगभग 200 शब्दों में सप्रसंग व्याख्या कीजिए :** **10x4=40**

क) पानी बिच मीन पियासी
मोहिं सुन सुन आवै हाँसी।।
घर में वस्तु नजर नहिं आवत।
बन बन फिरत उदासी।।
आतमज्ञान बिना जग झूठा।
क्या मथुरा क्या कासी।

ख) का सिंगार ओहि बरनौं, राजा। ओहिक सिंगार ओहि पै छाजा।।
प्रथम सीस कस्तूरी केसा। बलि बासुकि का और नरेसा।।
भौंर केस वह मालति रानी। बिसहर तुरे लेहिं अरघानी।।
बेनी छोरि झार जौं बारा। सरग पतार होइ अंधियारा।।
कोंवर कुटिल केस नग कारे। लहरन्हि भरे भुअंग बेसारे।।
बेधे जनौं मलयगिरि बासा। सोस चढ़े लोटहिं चहुं पासा।।
घुंधरवार अलकैं विषभरी। सँकरे पेम चहैं गिउ परी।।

ग) बिहसि लखनु बोले मृदु बानी। अहो मुनीसु महा भटमानी।।
पुनि पुनि मोहि देखाव कुठारू। चहत उड़ावन फूँकि पहारू।।
इहाँ कुम्हड़बतिया कोउ नाहीं। जे तरजनी देखि मरि जाहीं।।
देखि कुठारु सरासन बाना। मैं कछु कहा सहित अभिमाना।।
भृगुसुत समुझि जनेउ बिलाकी। जो कछु कहहु सहउँ रिस रोकी।।
सुर महिसुर हरिजन अरु गाई। हमरें कुल इन्ह पर न सुराई।।
बधें पापु अपकीरति हारें। मारतहूँ पा परिअ तुम्हारें।।
कोटि कुलिस सम बचनु तुम्हारा। ब्यर्थ धरहु धनु बान कुठारा।।

घ) झलकै अति सुन्दर आनन गौर, छके दृग राजत काननि छ्वै।
हँसि बोलन मैं छबि फूलन की बरषा, उर ऊपर जाति है ह्वै।
लट लोल कपोल कलोल करै, कल–कंठ बनी जलजावलि द्वै।
अंग अंग तरंग उठै दुति की, परिहे मनौ रूप अबै धर च्वै।

2. **निम्नलिखित में से प्रत्येक प्रश्न का उत्तर लगभग 500 शब्दों में दीजिए :** **15x3=45**

क) गीति काव्य के रूप में विद्यापति पदावली का मूल्यांकन कीजिए।
ख) कबीर की काव्य भाषा पर विचार कीजिए।
ग) पद्माकर के काव्य की विशेषताएँ बताइए।

3. **निम्नलिखित प्रत्येक प्रश्न का उत्तर लगभग 100 शब्दों दीजिए :** **5x3=15**

क) पद्मावत में अभिव्यक्त लोकजीवन की संक्षिप्त चर्चा कीजिए।
ख) मीरा की कविताओं में अभिव्यक्त प्रेम के स्वरूप का उल्लेख कीजिए।
ग) मुक्तक कवि के रूप में बिहारी की विशेषताएँ बताइए।

एम.एच.डी.–5
साहित्य सिद्धांत और समालोचना
सत्रीय कार्य

पाठ्यक्रम कोड : एम.एच.डी.–5
सत्रीय कार्य कोड : एम.एच.डी.–5 / टी.एम.ए. / 2016–2017
कुल अंक : 100

सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

1. संस्कृत आचार्यों द्वारा प्रतिपादित काव्य लक्षणों पर विचार कीजिए। 10

2. अलंकार सम्प्रदाय की शक्ति और सीमाओं पर प्रकाश डालिए। 10

3. साधारणीकरण का तात्पर्य स्पष्ट करते हुए उसका महत्त्व भी बताइए। 10

4. उदात्त के विषय में लांजाइनस के प्रमुख विचारों को रेखांकित कीजिए। 10

5. क्रोचे के अभिव्यंजना सिद्धांत की शक्ति और सीमाओं का विवेचन कीजिए। 10

6. मनोविश्लेषणवादी आलोचना की मूल स्थापनाओं पर विचार कीजिए। 10

7. हिंदी आलोचना में आचार्य रामचंद्र शुक्ल के योगदान पर प्रकाश डालिए। 10

8. छायावाद के कवि आलोचकों की आलोचना दृष्टि पर विचार कीजिए। 10

9. निम्नलिखित पर टिप्पणियाँ लिखिए : 5×4=20

   (क) प्रतिभा और कल्पना
   (ख) वक्रोक्ति सिद्धांत
   (ग) महाकाव्य की विशेषताएँ
   (घ) निर्वैयक्तिकता सिद्धांत

एम.एच.डी.–7 : हिन्दी भाषा और भाषाविज्ञान
सत्रीय कार्य

पाठ्यक्रम कोड : एम.एच.डी.–7
सत्रीय कार्य कोड : एम.एच.डी.–7 / टीएमए / 2016–17
कुल अंक : 100

नोट : सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

(क) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 1000-1000 शब्दों में दीजिए। 15x3=45

1 संप्रेषण और संचार में अंतर स्पष्ट करते हुए संप्रेषण के विकास पर प्रकाश डालिए।

2. समाज भाषाविज्ञान की आवधारणा स्पष्ट करते हुए भाषा वैविध्य पर प्रकाश डालिए।

3. भाषा–शिक्षण की प्रमुख विधियों का सोदाहरण विवेचन कीजिए।

(ख) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 500-500 शब्दों में दीजिए। 10x4=40

1. चोमस्की की भाषा और व्याकरण की संकल्पना स्पष्ट कीजिए।

2. वाक्य का स्वरूप स्पष्ट करते हुए वाक्य की संरचना के बारे में बताइए।

3. कोश के विभिन्न प्रकारों का परिचय दीजिए।

4. भाषा की आर्थी संरचना का उदाहरण सहित विवेचन कीजिए।

(ग) निम्नलिखित पर लगभग 250-250 शब्दों में टिप्पणियाँ लिखिए। 3x5=15

1. ध्वनि परिवर्तन के कारण

2. पिजिन और क्रियोल

3. विकारी और अविकारी शब्द

मॉड्यूल '1' – उपन्यास : विशेष अध्ययन
(एम.एच.डी.–13 से 16 तक)

एम.एच.डी.–13 : उपन्यास : स्वरूप और विकास
सत्रीय कार्य

पाठ्यक्रम कोड : एम.एच.डी.–13
सत्रीय कार्य कोड : एम.एच.डी.–13/टीएमए/2016–17
कुल अंक : 100

नोटः निम्नलिखित सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

1. उपन्यास के विविध रूपों का उल्लेख करते हुए उसकी लोकप्रियता के कारणों पर प्रकाश डालिए। 15

2. भारतीय उपन्यास की अवधारणा के बारे में अपना मत प्रस्तुत कीजिए। 15

3. उन्नीसवीं सदी के प्रमुख रूसी उपन्यासकारों के योगदान पर प्रकाश डालिए। 15

4. हिन्दी उपन्यास परंपरा में प्रेमचंद के महत्त्व का उल्लेख कीजिए। 15

5. हिंदी उपन्यासों में सामाजिक चेतना के क्रमिक विकास को रेखांकित कीजिए। 15

6. निम्नलिखित विषयों पर टिप्पणियाँ लिखिए : 5×5=25

   क) नवजागरण और हिंदी उपन्यास

   ख) राष्ट्रीय मुक्ति आंदोलन और भारतीय उपन्यास

   ग) उपन्यास और कहानी

   घ) यूरोपीय उपन्यास और यथार्थवाद

   ङ) उपन्यास में नायकत्व की संकल्पना

एम.एच.डी.–14

हिन्दी उपन्यास–1
(प्रेमचंद का विशेष अध्ययन)
सत्रीय कार्य

पाठ्यक्रम कोड : एम.एच.डी.–14
सत्रीय कार्य कोड : एम.एच.डी.–14 / टीएमए / 2016–17
कुल अंक : 100

1. **निम्नलिखित गद्यांशों की संदर्भ सहित व्याख्या कीजिए :** 10X4=40

(क) यह तुम्हारी भूल है। तुम यहाँ चाहे और किसी के गुलाम न हो, पर अपनी इन्द्रियों की गुलाम तो हो? इन्द्रियों की गुलामी उस पराधीनता से कहीं दुःखदायिनी होती है। यहाँ तुम्हें न सुख मिलेगा, न आदर, हाँ, कुछ दिनों भोग विलास कर लोगी, पर अंत में इससे भी हाथ धोना पड़ेगा। सोचो तो, थोड़े दिनों तक इन्द्रियों को सुख देने के लिए तुम अपनी आत्मा और समाज पर कितना बड़ा अन्याय कर रही हो?

(ख) उधर बाबू ज्ञानशंकर नैराश्य के उन्मत्त आवेश में गंगा तट की ओर लपके चले जाते थे, जैसे कोई टूटी हुई नौका जल तरंगों में बहती चली जाती हो। आज प्रारब्ध ने उन्हें परास्त कर दिया। अब तक उन्होंने सदैव प्रारब्ध पर विजय पायी थी। आज पासा पलट गया और ऐसा पलटा कि सँभलने की कोई आशा न थी। अभी एक क्षण पहले उनका भाग्य-भवन जगमगाते हुए दीपकों से प्रदीप्त हो रहा था, पर वायु के झोंके ने उन दीपकों को बुझा दिया।

(ग) हमारी बड़ी भूल यही है कि खेल को खेल की तरह नहीं खेलते। खेल में धांधली करके कोई जीत भी जाए तो क्या हाथ आएगा? खेलना तो इस तरह चाहिए कि निगाह जीत पर रहे, पर हार से घबराए नहीं; ईमान को न छोड़े। जीतकर इतना न इतराए कि अब कभी हार होगी ही नहीं। यह हार–जीत तो जिंदगानी के साथ है।

(घ) आधी रात तक वह इन चीज़ों को उठा–उठाकर अलग रखती रही मानो किसी यात्रा की तैयारी कर रही हो। हाँ, वह वास्तव में यात्रा ही थी– अँधेरे से उज़ाले की, मिथ्या से सत्य की। मन में सोच रही थी, अब यदि ईश्वर की दया हुई और वह फिर लौटकर घर आए, तो वह इस तरह रहेगी कि थोड़े में निर्वाह हो जाए। एक पैसा भी व्यर्थ न खर्च करेगी। अपनी मज़दूरी के पर एक कोड़ी भी घर में न आने देगी। आज से नये जीवन का आरंभ होगा।

2. 'सेवासदन' की नायिक 'सुमन' का चरित्र–चित्रण कीजिए। 10

3. 'प्रेमाश्रम' में किसानों के शोषण के लिए जिम्मेदार वर्ग कौन–कौन से हैं और उनसे किसानों की मुक्ति कैसे संभव है? बताइए। 10

4. 'रंगभूमि' के आधार पर उद्योगीकरण के बारे में प्रेमचंद के विचारों की समीक्षा कीजिए। 10

5. राष्ट्रीय मुक्ति आंदोलन के संदर्भ में 'गबन' की कथावस्तु का विवेचन कीजिए। 10

6. निम्नलिखित पर टिप्पणियाँ लिखिए : 5X4=20

(क) 'गबन' की जालपा

(ख) 'सेवासदन' में व्यक्त नारी जीवन

(ग) 'रंगभूमि' का कथा–शिल्प

(घ) 'प्रेमाश्रम' की भाषा

एम.एच.डी-15
हिंदी उपन्यास-2
सत्रीय कार्य

पाठ्यक्रम कोड : एम.एच.डी-15
सत्रीय कार्य कोड : एम.एच.डी.-15 / टीएमए / 2016-17
कुल अंक : 100

1. निम्नलिखित गद्यांशों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए: 10X4=40

(क) ''मामा, जब तुमसे खुद तुम्हारे कातिल का नाम पूछेगा तो तुम्हारी उंगली किस तरफ उठेगी? क्या खुदा नहीं जानता कि तुम्हारे कत्ल के लिये उत्तेजना दिलाने की जिम्मेदारी उन नेताओं पर है जो तुम्हारे जैसे इंसानों को शासन के सिंहासन पर पहुँच सकने का जीना बनाने के लिए जनता का ईंट–गारे की तरह प्रयोग करना चाहते हैं। क्या हमारे सर्व–साधारण अपने नेताओं को मानवता की कसौटी पर जाँच कर नहीं परखेंगे? क्या अपने स्वार्थों के लिये सर्व–साधारण को अंधा बना देना ही धर्म की रक्षा, प्रजातन्त्र और जनवाद है ....?''

(ख) ''मौलादाद जी, बड़ी सयानफ़ की बात की है आपने। मनुक्ख बच्चा बनकर धरती का ओढ़न न पकड़े तो धरती माँ क्यों दूध पिलाने लगी! अपने वेद–शास्त्र भी यही कहते हैं कि धरती माँ को आदर–प्यार से सींचा–सहारा न जाए तो माँ के थनों की तरह धरती के सुंब भी पूरी तरह नहीं खुलते। जो सुंब न खुलें तो दूध की धाराएँ तो आप ही रुक गई।''

(ग) ''देखो ये कहानियाँ वास्तव में प्रेम नहीं वरन् उस ज़िन्दगी का चित्रण करती है जिसे आज का निम्न–मध्यवर्ग जी रहा है। उसमें प्रेम से कहीं ज्यादा महत्त्वपूर्ण हो गया है आज का आर्थिक संघर्ष, नैतिक विश्रृंखलता, इसीलिए इतना अनाचार, निराशा, कटुता और अंधेरा चीरकर आगे बढ़ने, समाज–व्यवस्था को बदलने और मानवता के सहज मूल्यों को पुनःस्थापित करने की ताकत और प्रेरणा दी है।

(घ) वेदान्त हमारी परम्परा है और चूँकि गुटबंदी का अर्थ वेदान्त से खींचा जा सकता है, इसलिए गुटबंदी भी हमारी परंपरा है और दोनों हमारी सांस्कृतिक परम्पराएँ है। आज़ादी मिलने के बाद हमने अपनी बहुत–सी सांस्कृतिक परम्पराओं को फिर से खोदकर निकाला है। तभी हम हवाई जहाज से यूरोप जाते हैं, पर यात्रा का प्रोग्राम ज्योतिषी से बनवाते हैं।

2. 'झूठा–सच' उपन्यास को क्या विभाजन का महाकाव्य कहा जा सकता है? अपना मत प्रस्तुत कीजिए। 10

3. परिवेश चित्रण की दृष्टि से 'जिंदगीनामा' उपन्यास का मूल्यांकन कीजिए। 10

4. 'सूरज का सातवां घोड़ा' उपन्यास की शिल्पगत विशेषता का विवेचन कीजिए। 10

5. ’राग दरबारी’ में निहित स्वातन्त्र्योत्तर’ भारत के यथार्थ के प्रति लेखक की दृष्टि की समीक्षा कीजिए। 10

6. निम्नलिखित विषयों पर टिप्पणियाँ लिखिए : 5X4=20

(क) ’झूठा सच’ के स्त्री पात्र

(ख) ’जिन्दगीनामा’ की भाषा

(ग) ’सूरज का सातवां घोड़ा’ में लेखकीय दृष्टि

(घ) ’राग दरबारी’ का प्रतिपाद्य

एम.एच.डी.–16

भारतीय उपन्यास
सत्रीय कार्य

पाठ्यक्रम कोड : एम.एच.डी.–16
सत्रीय कार्य कोड : एम.एच.डी.–16/टी.एम.ए./2016–2017
कुल अंक : 100

क) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 800–1000 शब्दों में लिखिए : 15×4=60

(1) 'चेम्मीन' में अभिव्यक्त सामाजिक यथार्थ की चर्चा कीजिए।

(2) 'संस्कार' के कथानक का विश्लेषण कीजिए।

(3) विरसा मुंडा के आंदोलन के संदर्भ में 'जंगल के दावेदार' उपन्यास का मूल्यांकन कीजिए।

(4) 'मानवीनी भवाई' में ग्रामीण चेतना की समर्थ अभिव्यक्ति हुई है – इस कथन की समीक्षा कीजिए।

ख) निम्नलिखित पर टिप्पणियाँ लिखिए : 10×4=40

(क) तकषि शिवशंकर पिल्लै का साहित्य
(ख) कन्नड़ साहित्य की परंपरा
(ग) गुजराती साहित्य का गांधी युग
(घ) बांग्ला उपन्यास साहित्य में रवीन्द्र नाथ ठाकुर का योगदान

मॉड्यूल '2'– दलित साहित्य : विशेष अध्ययन
(एम.एच.डी.–17 से 20 तक)

सत्रीय कार्य : एम.एच.डी.–17
'भारत की चिंतन परंपराएं और दलित साहित्य'

सत्रीय कार्य
(पूरे पाठ्यक्रम के सभी खंडों पर आधारित)

सत्रीय कार्य कोडः एम.एच.डी.–17/टी.एम. ए/ 2016– 2017
कुल अंकः 100

1. निम्नलिखित काव्यांशों की लगभग 200 शब्दों में संदर्भ सहित व्याख्या कीजिए : 10x4=40

क) ''सत्येशु दुःखादिषु दृष्टरार्या सम्यग्वितर्कश्च पराक्रमश्च।
इदं त्रयं ज्ञानविधौ प्रवृतं प्रज्ञाश्रयं क्लेशपरिक्षयाय।।''

ख) यः प्रतीत्यसमुत्पादः शून्यतां तां प्रचक्ष्महे।
स प्रज्ञप्तिरूपमादाय प्रतिपत्सैव मध्यमा ।।

ग) जहाँ देखता हूँ, वहाँ, तुम हो,
सब में तुम्हारा विस्तार है।
विश्व के बाहु तुम हो,
विश्व के नयन तुम हो,
विश्व के मुख तुम हो,
विश्व के पैर तुम हो,
हे कूडल संगम देव।

घ) गुरू षोजौ गुरदेव गुरू षोजौ, बदंत गोरा ऐसा।
मुक्ते हौइ तुम्हें बंधनि पड़िया, ये जोग है कैसा।।
चांम ही चांम धसंता गुरदेव दिन दिन छीजै काया।
होठ कंठ तालुका सोषी, काढ़ि मिजालू षाया।।

2. निम्नलिखित प्रत्येक प्रश्न का उत्तर लगभग 500 शब्दों में दीजिए : 10x4=40

क) ईसा पूर्व छठी शताब्दी में उत्तर भारत की स्थिति पर प्रकाश डालिए।
ख) बुद्ध दर्शन में अनात्मवाद के सिद्धांत के महत्त्व का उल्लेख कीजिए।
ग) चार्वाक दर्शन' का स्वर मानवतावादी है, इस संबंध में अपना मत प्रस्तुत कीजिए।
घ) कन्नड की भक्ति साहित्य परंपरा का परिचय दीजिए।

3. निम्नलिखित में से किन्हीं दो प्रश्नों का उत्तर लगभग 250 शब्दों में दीजिए: 10x2=20

क) अश्वघोष की प्रमुख कृतियों की विषयवस्तु का परिचय दीजिए।

ख) आर्य वसुबंधु की रचनाओं पर संक्षेप में टिप्पणी लिखिए।

ग) तेलुगु के प्रमुख संतों का परिचय दीजिए।

घ) निर्गुण संतों के काव्य की विशेषताएँ बताइए।

सत्रीय कार्य : एम.एच.डी.–18
(दलित साहित्य की अवधारणा और स्वरूप के सभी खण्डों पर आधारित)

पाठ्यक्रम कोड : एम.एच.डी.–18
सत्रीय कार्य कोड एम.एच.डी.–18/टी एम ए/2016–17
कुल अंक 100

निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं 'दस' प्रश्नों का उत्तर लगभग 500–500 शब्दों में दीजिए।

10x10=100

1. दलित चेतना से क्या अभिप्राय है? इसकी सविस्तार व्याख्या कीजिए।
2. दलित साहित्य आंदोलन की पृष्ठभूमि पर प्रकाश डालिए।
3. 'सत्यशोधक समाज' के गठन की पृष्ठभूमि बताते हुए उसके प्रमुख सिद्धांतों का मूल्यांकन कीजिए।
4. भारतीय जाति–व्यवस्था के स्वरूप को स्पष्ट करते हुए डॉ. आंबेडकर के विचारों की समीक्षा कीजिए।
5. अछूतानन्द के सामाजिक सुधार आंदोलन का परिचय दीजिए।
6. हीरा डोम की 'अछूत की शिकायत' कविता में अभिव्यक्त दलित चेतना के पहलुओं को स्पष्ट कीजिए।
7. किसान जीवन में क्रांति लाने हेतु महात्मा फूले द्वारा सुझाए गए महत्त्वपूर्ण उपायों का वर्णन कीजिए।
8. 'हिंदू कोड बिल' वास्तविक रूप में भारतीय हिंदू स्त्री की मुक्ति लाने वाला संवैधानिक कानून है।' इस तथ्य की विवेचना कीजिए।
9. पेरीयार ई.वी. रामास्वामी नायकर के आत्मसम्मान आंदोलन की क्रांतिकारी भूमिका स्पष्ट कीजिए।
10. 'नारायण गुरू धर्म परिपालम योगम' संस्था के योगदान पर टिप्पणी लिखिए।
11. 'दलित' शब्द का अर्थ स्पष्ट करते हुए दलित साहित्य की विशेषताएँ बताइए।
12. दलित साहित्य के लिए अलग सौंदर्यशास्त्र क्यों जरूरी है? अपना मत प्रस्तुत कीजिए।
13. दलित आंदोलन में दलित साहित्य की भूमिका पर प्रकाश डालिए।
14. दलित साहित्य में आक्रोश एवं विद्रोह का स्वर क्यों है? इसके सामाजिक कारणों का उल्लेख कीजिए।

सत्रीय कार्य : एम.एच.डी–19
हिंदी दलित साहित्य का विकास
(पूरे पाठ्यक्रम के सभी खण्डों पर आधारित)

पाठ्यक्रम कोड : एम.एच.डी.–19
सत्रीय कार्यः एम.एच.डी.–19/टीएमए/ 2016–17
कुल अंकः 100

1. **निम्नलिखित काव्यांशों में से किन्ही दो की लगभग 200 शब्दों में संदर्भ सहित व्याख्या कीजिए।** **10x2=20**

क) मेरे और तुम्हारे बीच
एक रेतीला ढूह है
जो किसी अंधड़ का इंतजार करने से पहले
किसी भी वक्त फट सकता है
जिसके गर्भ से निकलेंगे
घृणा में लिपटे कुटिल शब्द
जिन्हे जलना होगा
दहकती भट्ठी में
रोटी की महक में बदलने के लिए।

ख) यदि वेद–विद्या पढ़ने की करो धृष्टता,
तो काट दी जाय तुम्हारी जिह्वा
यदि यज्ञ करने का करो दुस्साहस,
तो छीन ली जाय तुम्हारी धन सम्पत्ति,
या, कत्ल कर दिया जाय तुम्हें उसी स्थान पर।
तब तुम्हारी निष्ठा क्या होती?

ग) वर्णाश्रम की जाँघ चाटने वाले
सतयुगी शासक अब
राजपथ के इर्द–गिर्द बनी
माँदों में घुस चुके हैं।।
पक रही है यहाँ
मृत इतिहास की जहरभरी
चाशनियाँ, उठाते हैं वे
जिन्दगी का हर लुत्फ
और समता भरे भारत के लिए
की गई हर लड़ाई को
कहते हैं जो व्यभिचार।।

घ) मेरे बेटे के साथ
अपने बेटे को भेजो
दिहाड़ी की खोज में।
और अपनी बिटिया को

हमारी बिटिया के साथ
भेजो कटाई करने
मुखिया के खेत में।
शाम को थक कर
पसर जाओ धरती पर
सूँघों खुद को
बेटे को
बेटी को
तभी जान पाओगे तुम
जीवन की गंध को,
बलवती होती है जो
देह की गंध से।

ङ) मैं भागती हूँ–सब ओर एक साथ
विद्रोहिणी बन चीखती हूँ
गूंजती है आवाज सब दिशाओं में
मुझे अनन्त असीम दिगन्त चाहिए
छत का खुला आसमान नहीं
आसमान की खुली छत चाहिए!
मुझे अनन्त आसमान चाहिए!!

2. **निम्नलिखित गद्यांशों में से किन्हीं दो की लगभग 200 शब्दों में सप्रसंग व्याख्या कीजिए:** **10x2=20**

क) बालमन की यह खरोंच ग्रंथि बन गई थी। जब भी वह पच्चीस की संख्या पढ़ता या लिखता, उसे पच्चीस चौका डेढ़ सौ ही याद आता। साथ ही याद आता पिताजी का विश्वास भरा चेहरा और मास्टर शिवनारायण मिश्रा का गाली–गलौज करता लाल–लाल गुस्सैल चेहरा। सुदीप दोनों चेहरे एक साथ स्मृति में दबाए पच्चीस चौका डेढ़ सौ की अंधेरी दुर्गम गलियों में भटकने लगा। जैसे–जैसे बड़ा होने लगा, कई सवाल उसके मन को विचलित करने लगे, जिनके उत्तर उसके पास नहीं थे।

ख) ठाकुर ने सुना तो खोपड़ी जल उठी उसकी। लगा दिमाग में जितनी भी नसें हैं वे आपस में जुड़ गयी हैं और वे अब फटी कि तब। वह गुस्से से बड़बड़ा उठा– ''ससुरे चमार–भंगियों ने देखी कितना सर उठा रक्खा है.....? दस–बीस साल पहले तो मुँह में जबान ही जैसे न थी और अब कहते हैं गाँव में कोई ठाकुर–वाकुर नहीं.....।''

ग) ''क्यों पिल पड़ते हो इस तरह खाने पर।'' बाद में हरखू ने उसे समझाने की कोशिश की थी, ''यह ठीक है कि हम लोग देवताओं की तरह धूप सुगन्ध और फल की खुशबू सूँघकर रह सकते। हमें एक पेट भात चाहिए ही चाहिए। लेकिन क्या इस तरह जलील होकर? यह भी ठीक है, हमें कभी बढ़िया खाना नसीब नहीं होता और बाबू लोगों के यहाँ किसी अवसर पर ही ऐसा खाना मिलता है।'' लेकिन गंगाराम ने बात काट दी थी। कहा था, ''काका, मैं सिर्फ पेट भरने के लिए नहीं खाता। मैं खा–खाकर इतना

मोटा, इतना ताकतवर हो जाना चाहता हूँ कि मुझे जो लड़के रात–दिन चिढ़ाते रहते हैं– गंगाराम–नंगाराम कहके – मैं अकेले उन सबों को सबक सिखा सकूँ।''

घ) ''क्या समझता है ये मस्टरवा साला, ब्राह्मण हो गया जैसे भगवान। जो है वही अंतिम है। जो बच्चा पैदा हो गया है उसके बाद फिर बच्चे होंगे ही नहीं। सतयुग–द्वापर युग की बात करेगा। नहीं बदलेगा। समय की नब्ज पहचान कर चलो, नहीं तो ब्राह्मण संस्कारी और छुआछूत के खोल में तड़प–तड़प कर मर जाएगा। समय पर परिस्थितियों से समझौता करो तभी खैर है। हवा का रूख बदल गया है, अब टाट–झोंपड़ा उड़ेगा देखना।''

3. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर लगभग 300 शब्दों में लिखिएः 10x4=40

क) **'परिवर्तन की बात'** कहानी के माध्यम से वर्चस्ववाद और शोषण की परंपरा के संबंधों को स्पष्ट कीजिए।

ख) दलित कहानी की सोद्देश्यता पर विचार कीजिए।

ग) दलित कहानी के सामाजिक और सांस्कृतिक सरोकारों को निर्दिष्ट कर सोदाहरण विश्लेषण कीजिए।

घ) दलित उत्पीड़न के संदर्भ में स्वानुभूति और सहानुभूति के सवाल को **'आमने–सामने'** कहानी के माध्यम से विवेचित कीजिए।

ड़) **'अपने–अपने पिंजरे'** के संरचनागत वैशिष्ट्य का उद्घाटन कीजिए।

च) दलित आत्मकथनों की मुख्य विशेषताएँ क्या हैं? सोदाहरण समझाइए।

छ) डॉ. आंबेडकर का दलित समाज पर क्या असर पड़ा? दलित आत्मकथनों की रोशनी में इसकी व्याख्या कीजिए।

4. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं दो के उत्तर लगभग 200 शब्दों में लिखिए। 10x2=20

क) **''घृणा तुम्हे मार सकती है''** कविता के उद्देश्य पर टिप्पणी लिखिए।

ख) **'जनपथ'** कविता के संरचना शिल्प पर प्रकाश डालिए।

ग) दलित कहानी तथा सामान्य कहानी के अंतर को स्पष्ट कीजिए।

घ) दलित स्त्री आत्मकथा के वैशिष्ट पर प्रकाश डालिए।

(ड़) 'प्रेमचंद तथा दलित कहानिकारों की कहानियों में मुख्य अंतर क्या है। स्पष्ट कीजिए।

सत्रीय कार्य एम.एच.डी.–20
भारतीय भाषाओं में दलित साहित्य
(पूरे पाठ्यक्रम के सभी खण्डों पर आधारित)

सत्रीय कार्य : एम.एच.डी.–20 / टीएमए / 2016–17
कुल अंकः 100

1. **निम्नलिखित काव्यांशों की लगभग 200 शब्दों में संदर्भ सहित व्याख्या कीजिए।** **10x4= 40**

क) नामांतर संघर्ष के अगली पंक्ति में
नारा देती 'नामांतर होना ही चाहिए'
पुलिस की लाठी हाथ पर झेलकर
हँसते–हँसते जेल में जाते हुए
पुलिस की गोली से शहीद हुए
इकलौते बेटे के लिए कहते हुए
अरे, 'तुम भीमराव के लिए शहीद हुए
जन्म तुम्हारा सार्थक हुआ।'
पुलिस से कहते सुना मैंने

ख) मैं अभी भी निषेधित मानव हूँ
सांस मेरी बहिष्कृत है
मेरी काटि को ताड़ के पत्तों से लपेट कर
मेरे मुंह पर उलगदान लटका कर
लोगों के बीच मुझे
असहा मानव–पशु बनाने वाले मनु ने
जब मेरे काले माथे पर जबरदस्ती से
निशेध का ठप्पा लगाया था
तभी मेरी समस्त जाति की
शनैः शनैः हत्या कर दी गई
अब नया क्या मरना?
यदि हमारी रहस्यमय मौतों को लिखा जाय
तो हमारी हत्याएं ही पत्रिकाओं की
सनसनीखेज सुर्खियाँ बनेगी
इस देश में कहीं भी खोद कर देखा जाय
तो हमारे कंकाल मिट्टी के कंठ से दिखेंगे।

ग) घोड़ा नहीं जानता कि
वह पैरों से खोद सकता है धरती
दुलत्तियों से तोड़ सकता है
सवार का चेहरा
चबा सकता है चाबुक को
नरम हाथों सहित
तोड़ सकता है लगाम
गिरा सकता है
पीठ पर पड़ काठी को
कुचल सकता है
सदियों से सवार देह को
पर, घोड़ा तो अभी घोड़ा है
पंगु का पंगु है
न समझता है, ने सोचता है
बस, अपने आप को ही नोचता है

घ) वह तो मेरा भाई है
या पराभव का दुश्मन?
उसके बच्चे तो सब हीरो बने फिरते
मेरे मैला ढोते, कचरा सुलटते
ये तो कैसा इंसाफ हे माँ
यह तो सरासर बेइमानी है माँ
मुझे तो मेरे बाबा की वसीयत का
इत्ता सा भाग नहीं मिला
जैसे की मैं दुजारू
तू भी बहुत बेइमानी करती है माँ

2. निम्नलिखित में से चार प्रश्नों के उत्तर लगभग 500 शब्दों में दीजिए। 10x4=40

क) दलित साहित्य संबंधी बाबूराव बागूल की अवधारणा का उल्लेख कीजिए।

ख) **'जब मैंने जाति छुपाई'** कहानी में अभिव्यक्त जातिभेद की जटिलता को उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए।

ग) दलित साहित्य–आंदोलन में अर्जुन डांगले के योगदान पर प्रकाश डालिए।

घ) **'कवच'** कहानी का बाल चरित्र 'गौन्या' के मानसिक द्वंद्व का विवेचन कीजिए।

ड) गुजराती दलित कहानी की सामाजिक और साहित्यिक पृष्ठभूमि का वर्णन कीजिए।

च) डॉ. गुरूचरण सिंह राओ के जीवन और रचना पर प्रकाश डालिए।

छ) **'मशालची'** के माध्यम से दलित मुक्ति संघर्ष की दिशा और दशा का वर्णन कीजिए।

ज) मराठी दलित आत्मकथनों में **'अक्करमाशी'** की विशिष्टता को रेखांकित कीजिए।

झ) **'जीवन हमारा'** के आधार पर दलित जीवन के सामाजिक, सांस्कृतिक और आर्थिक सरोकारों का विवेचन कीजिए।

3. निम्नलिखित में से चार प्रश्नों के उत्तर लगभग 500 शब्दों में दीजिए। 5x4=20

1) तेलुगु दलित कविता की विशेषता

2) माँ कविता में अभिव्यक्त दलित स्त्री का संघर्ष

3) **'पड़'** कविता में वर्णित जजमानी प्रथा

4) **'बिच्छू'** कहानी की कथावस्तु

5) **'मोची की गंगा'** कहानी की भाषा

6) वेबीताई कांवले का जीवन परिचय

7) मशालची उपन्यास की भाषा

8) **'रोटले की नज़र लग गई'** कहानी का उद्देश्य